SOCIAL ANTHROPOLOGY.

मानवशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Anthropology)

मनुष्य के अध्ययन को ही मानवशास्त्र (नृतत्व) कहा जाता है। सामान्यतः मानवशास्त्र मानव और उसके कार्यों का अध्ययन है। प्रारम्भ में समाजशास्त्र, मूगोल अथवा इतिहास का एक भाग माना जाता था। उन्नीसवीं सदी के मध्य मानवशास्त्र का एक विज्ञान के रूप में विकास हुआ। इसी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्राकृतिक विज्ञान का विकास होने लगा। इसी समय मनुष्य, जाती के भिन्न-भिन्न समूहों को वैज्ञानिक आधार पर वर्गीकृत करने के प्रारम्भिक प्रयत्न हुए। मनुष्य को प्रकृति का अंग मानकर उसका अध्ययन के प्रारम्भिक प्रयत्नों के फलस्वरूप ही मानवशास्त्र का जन्म हुआ।

शाब्दिक दृष्टि से मानवशास्त्र की व्युत्पत्ति ग्रीक शब्द एन्थ्रोपस (Anthropos) जिसका अर्थ है 'मानव' (Man) तथा 'लॉजी' (Logy) जिसका अर्थ है 'विज्ञान' से हुई है। इस प्रकार मानवशास्त्र का शाब्दिक अर्थ मानव का विज्ञान है। वास्तव में मानव और उसके कार्यों का अध्ययन ही मानवशास्त्र में किया जाता है, लेकिन यहां हमें इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि मानव का अध्ययन अन्य विज्ञानों के द्वारा भी किया जाता है। मानव के व्यवहार का अध्ययन अनेक सामाजिक विज्ञानों; जैसे इतिहास, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र के द्वारा भी किया जाता है। मानवशास्त्री मनुष्यों के किसी

विशेष समूह मात्र का अथवा इतिहास के किसी एक काल विशेष का ही अध्ययन नहीं करता है। वह अपने अध्ययन को इस प्रकार के सीमाओं में नहीं बांधता है अपितु वह मानव के प्रारम्भिक स्वरूपों और उनके व्यवहार में उतनी ही रुची लेता है जितनी वर्तमान समाज के मानव में। वह प्रारम्भिक समय से लेकर वर्तमान समय तक के मानव जाति के संरचनात्मक उद्विकास और सभ्यताओं के वृद्धि का अध्ययन करता है। मानव और उसके कार्यों का जितना विस्तारपूर्वक अध्ययन मानवशास्त्र के अन्तर्गत आता है, उतना अन्य किसी विज्ञान के अन्तर्गत नहीं आता। यहां मानवशास्त्र के कुछ प्रमुख परिभाषाओं पर विचार करना आवश्यक है।

होबल (Hobel) ने लिखा है,

"मानवशास्त्र मानव और उसके समस्त कार्यों का अध्ययन है। अपने सम्पूर्ण अर्थ में यह मानव की प्रजातियों एवं प्रथाओं का अध्ययन है।"

क्रोबर (Krober) के अनुसार—

"मानवशास्त्र मनुष्यों के समूहों तथा उनके व्यवहार और उत्पादन का विज्ञान है।"

जेकब्स तथा स्टर्न (Jacobs and Stern) ने लिखा है—

"मानवशास्त्र मनुष्य जाति के जन्म से लेकर वर्तमान काल तक के शारीरिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास तथा व्यवहारों का वैज्ञानिक अध्ययन है।"

हरस्कोविट्स का कथन है, "मानवशास्त्र मानव और उसके कार्यों का अध्ययन है।"

मजुमदार तथा मदान ने लिखा है:-
"मानवशास्त्र मानव के उद्भव एवं विकास का शारीरिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण से अध्ययन करता है।"
पेनीमैन मानवशास्त्र को 'मानव सम्बन्धी विज्ञान' मानते हैं
चैपल तथा कून मानवशास्त्र को 'मानव सम्बन्धी विज्ञान' मानते हैं।
राल्फ तथा बील्स मानवशास्त्र को- 'मनुष्य के शारीरिक और सांस्कृतिक विकास के नियम तथा सिद्धान्तों का अनुसंधान करने वाला विज्ञान' मानते हैं।
उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि-
(1) मानवशास्त्र, मानवजाति के जन्म के समय से लेकर वर्तमान समय तक के मानव एवं उसके कार्यों का विस्तृत अध्ययन है।
(2) यह मानव का शारीरिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टि से अध्ययन है।
(3) मानवशास्त्र प्रत्येक युग और प्रत्येक सांस्कृतिक स्तर के मानव का अध्ययन है।
(4) यह किसी स्थान विशेष, समय विशेष तथा किसी विशेष सांस्कृतिक स्तर के अध्ययन तक ही अपने आप को सीमित नहीं रखता।
मानवशास्त्र के अर्थ को और भी स्पष्टतः समझने की दृष्टि से डॉ. एस. सी. दुबे ने लिखा है, "प्राणीशास्त्र के शाखा के रूप में नृतत्व (मानवशास्त्र) प्राचीन तथा आधुनिक मानव के विभिन्न समूहों की शारीरिक रचना एवं प्रक्रियाओं की समान-

ताओं तथा भिन्नताओं का विश्लेषण और वर्गीकरण करता है। दूसरी ओर एक सांस्कृतिक - सामाजिक अध्ययन के रूप में वह इन्हीं प्रकार विभिन्न संस्कृतियों की संरचना तथा प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है।"